विचार बिन्दु

ईश्वर एक है और वह एकता को पसंद करता है। –हज़रत मोहम्मद

नव वर्ष में एक ही आशा – न कोई हिंसा, न कोई कटुता

वर्ष 2022 का आगमन हो चुका है, एवं यह प्रश्न सबके मन में है कि यह वर्ष कैसा होगा? मेरा तो यह मानना है यह वर्ष कैसा भी हो, किंतु 2021 जैसा ना हो। यही कामना है कि हमने 2021 में जो देखा, वह 2022 एवं आने वाले किसी भी वर्ष में देखने को ना मिले।

वर्ष 2021 में, विशेष कर, अप्रैल– मई– जून माह में जिस प्रकार की मानवीय त्रासदी देखी गई वैसी स्वतंत्र भारत के इतिहास में कभी नहीं देखी गई। ऐसा शायद पहली बार हुआ कि देश में अंतिम संस्कार के लिए भी घंटों तक इंतजार करना पड़ा। निकटतम परिजन भी अंतिम संस्कार के समय उपस्थित नहीं रह सके।

कोरोना के कारण,न केवल अर्थव्यवस्था अस्त–व्यस्त हुई, अपने प्रिय जनों से असमय बिछड़ना पड़ा, अपितु बच्चे भी विद्यालय बंद होने के कारण घरों में कैद होकर रह गए। इससे उनके बचपन के दो वर्ष बिना शिक्षा के, बिना सामाजिकता के व्यर्थ चले गए। पूरा समय मोबाइल का स्क्रीन देखते रहने से न केवल आंखों पर असर पड़ा अपितु उनकी मानसिकता भी बुरी तरह प्रभावित हुई। हम केवल यह कामना ही कर सकते हैं कि वर्ष 2022 में कोरोना का अंतिम संस्कार हो। यदि यह रहे भी तो सामान्य बीमारी की तरह आकर चला जाए। एक और जहां बीमारी ने मानव को त्रस्त किया वहीं मानव ने ही मानव का शोषण करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। निजी अस्पताल हो, चिकित्सक हों या कोई अन्य, जहां अधिकांश लोग देवदूत की तरह मरीजों की सेवा कर रहे थे, वहीं कई ऐसे भी थे जो असहाय लोगों की स्थिति का लाभ उठाने से नहीं चूके। मेडिकल स्टोर में 5000 की Remdesivir को 50000 रुपये तक में बेची गई। कुछ निजी अस्पतालों ने भर्ती करने के लिए अनाप–शनाप धनराशि वसूल की। लोगों के घर–बार उजड़ गए, जीवन बर्बाद हो गए, किंतु जिन्हें दया ना आनी थी, वह नहीं आई।

2021 के प्रारंभ में पश्चिम बंगाल के चुनाव में बड़ी मात्रा में हिंसा देखी गई। प्रचार के दौरान भाषा का स्तर निम्न से निम्नतम होता दिखाई दिया। कोरोना का प्रकोप होने के बावजूद, सत्ता में आने की लालसा में हजारों – लाखों लोगों की रैलियां करने से परहेज नहीं किया।

राजनीतिक दलों एवं कार्यकर्ताओं में कटुता वर्ष 2021 के अंत तक इतनी बढ़ गई कि शालीनता की सभी सीमाएं लांघ दी गईं। जिस प्रकार की भाषा का उपयोग हरिद्वार और रायपुर में आयोजित तथाकथित धर्म संसद में किया गया, उसने तो सारी हदें पार कर दीं। रायपुर की धर्म संसद में एक तथाकथित संत कालीचरण महाराज ने महात्मा गांधी को न केवल अपशब्द कहे बल्कि उनकी हत्या करने वाले गोडसे को सलाम करते हुए उनका सम्मान किया। रायपुर चूँकि छत्तीसगढ़ में है एवं वहां पर कांग्रेस की सरकार है, इस तथाकथित संत पर मुकदमा दर्ज करते हुए उसे गिरफ्तार भी कर लिया गया। हरिद्वार की धर्म संसद में यह आव्हान किया गया कि गैर हिंदुओं से लड़ाई करने के लिए केवल तलवार से काम नहीं चलेगा और बड़े हथियार का उपयोग करना पड़ेगा। इस प्रकार एक धर्म विशेष के लोगों के नरसंहार का आव्हान करना भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में कल्पना से परे था। यह तो अधिकांश हिंदू समुदाय की परिपक्वता की निशानी है कि इस प्रकार के आव्हान के बावजूद उनके मन में हिंसा की भावना नहीं उत्पन्न हुई एवं इसका कोई असर नहीं हुआ। इसी प्रकार का आव्हान स्वाभाविक रूप से, दूसरे पक्ष की ओर से भी हुआ। प्रसिद्ध फिल्म कलाकार नसीरुद्दीन शाह ने एक साक्षात्कार में यहां तक कहा कि भारत एक गृह युद्ध की स्थिति में पहुंच सकता है।

आश्चर्य की बात तो यह है इस प्रकार के आव्हान करने वाले तथाकथित साधु यति नरसिंहानंद के विरुद्ध आज तक गिरफ्तारी की कार्यवाही नहीं की गई है। इस प्रकार के बयान समान्य अपराध की श्रेणी के नहीं है एवं इनसे हिंसा भड़कने की आशंका को देखते हुए, इन्हें राष्ट्रद्रोह माना जाना चाहिए एवं साथ ही संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध यू ए पी ए का उपयोग करते हुए उन्हें तत्काल जेल में भेजना चाहिए।

वर्ष 2022 के फरवरी – मार्च में अन्य राज्यों के साथ ही उत्तर प्रदेश में भी विधानसभा के चुनाव होने हैं। इसके लिए चुनाव की घोषणा होनी शेष है, किंतु कई दिनों से सभी दलों द्वारा बड़ी–बड़ी रैलियां की जा रही हैं। प्रधानमंत्री स्वयं गत एक माह में दस से अधिक बार उत्तर प्रदेश जा चुके हैं। एक ओर जहां बढ़ते कोरोना के चलते नागरिकों को दूरी बनाए रखने एवं मास्क पहनने के निर्देश दिए जा रहे हैं, वहीं राजनीतिक रैलियों में हजारों की संख्या में लोग बिना दूरी बनाए और बिना मास्क पहने, भाग ले रहे हैं। राजनेता, जिनमें गृहमंत्री और प्रधानमंत्री तक सम्मिलित हैं, बिना मास्क पहने रैलियों को संबोधित कर रहे हैं। चुनावों में जीत सभी दल प्राप्त करना चाहते हैं किंतु उसके लिए क्या तरीके अपनाए जाते हैं, यह महत्वपूर्ण है। यदि समाज में शांतिपूर्वक सद्भावना का वातावरण बनाना है तो उसकी जिम्मेदारी सभी दलों के नेताओं को लेनी होगी। आलोचना करना एक बात है किंतु व्यक्तिगत आक्षेप लगाना और उसमें मर्यादा की सीमा को लांघना, दूसरी बात है।

क्या देश का नागरिक इतनी सी आशा सन् 2022 में नहीं कर सकता कि सभी दलों के नेता गण देश हित में कार्य करेंगे, चुनावों में मर्यादित भाषा का प्रयोग करेंगे एवं केवल उन बिंदुओं पर अपना प्रचार सीमित रखेंगे जो सामान्य जन के जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में सहायक हो।

देश के नागरिक बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा की कमी और स्वास्थ्य के अभाव से जूझ रहे हैं, वहीं इस चुनाव प्रचार में अब तक ये मुद्दे लगभग गायब ही हैं। अब चुनाव धीरे–धीरे केवल धर्म और जाति पर आधारित होते जा रहे हैं। यह देश का दुर्भाग्य ही है कि स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने पर जहां सरकार अमृत महोत्सव मना रही है, वहीं अभी चुनाव केवल हिंदू–मुसलमान या जाति के आधार पर लड़ने का प्रयास हो रहा है। शायद कुछ दलों को लगता है कि ध्रुवीकरण से उनको लाभ होगा।

मतदाताओं को यह तय करना है कि वे जाति – धर्म से ऊपर उठकर सामान्य व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों के आधार पर मतदान करें। एक बार यदि देश का मतदाता विकास एवं कल्याण के मुद्दों के आधार पर अपने प्रतिनिधि का चयन करेगा, तो स्वतः ही अगले चुनावों से नेतागण केवल इन्हीं मुद्दों को जनता के बीच ले जाएंगे एवं वे धार्मिक एवं जातीय ध्रुवीकरण के आधार पर चुनाव जीतने का प्रयास नहीं करेंगे।

यह देश के नागरिकों को तय करना है कि वह 2022 में उत्तर प्रदेश की सत्ता पर किसे बिठाते हैं, उन्हें, जो हिंसक तरीकों से सत्ता में आना चाहते हैं या उन्हें, जो सद्भावना का वातावरण बनाते हुए आम नागरिक के मुद्दों पर गंभीरता से काम करना चाहते हैं?

पूरे विश्व में शांति और अहिंसा की बात करने वाले भारत के चुनाव यदि हिंसा और कटुता के वातावरण में हों तो यह हमारे लिए शर्म की बात है। जब चुनाव कटुता और हिंसा पर आधारित हैं, तो समाज में इसका व्यापक प्रभाव होता है। यह प्रभाव चुनाव होने के बाद भी लंबे समय तक बना रहता है। इस बात के प्रमाण हमें पश्चिम बंगाल के चुनाव में देखने को मिले हैं। देश के नागरिकों को नेताओं से यह अपेक्षा रहती है कि वे विकास का मार्ग प्रशस्त करेंगे एवं समाज में सद्भावना स्थापित करने हेतु प्रयासरत रहेंगे। अब यह नेताओं पर है कि वह साधारण नागरिक से जुड़े हुए मूल मुद्दों को केंद्र बिंदु बना कर चुनाव प्रचार करें और अपनी बात को पुरजोर तरीके से जनता के समक्ष रखें। 2022 में पांच राज्यों के महत्वपूर्ण विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। मैं एक साधारण नागरिक की तरह यह अपेक्षा करता हूं और आशा रखता हूं कि नव वर्ष, सभी दलों के नेतृत्व को ऐसी सद्बुद्धि एवं सोच दे, जिसे आधार बनाकर वह देश हित को सर्वोपरि रखते हुए, स्वयं अपने एवं दल के हित को उसके बाद रखें। नीतियों की आलोचना भी की जाए और कठोर से कठोर शब्दों में की जाए, किंतु ऐसा करते समय गरिमा और मर्यादा बनाए रखना आवश्यक है। जब नेता गण, धर्म और जाति से ऊपर उठकर सामान्य नागरिकों के हित की बात करेंगे, तो नागरिक भी मतदाता के रूप में उसी उम्मीदवार का चयन करेंगे जो इस दृष्टि से सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

नव वर्ष की इससे बड़ी सौगात देश के लिए क्या हो सकती है कि चुनाव, जाति – धर्म आधारित हिंसा से मुक्त होकर विकास एवं कल्याण की नीतियों और योजनाओं पर आधारित हों। नेतागण अपने वाणी पर संयम रखें और अपने स्वार्थ की खातिर देश हित को गिरवी ना रख दें। समाज में सभी लोग पूरक की तरह काम करें, ताकि प्रत्येक की क्षमता का पूरा लाभ देश को मिले एवं वह प्रगति के रास्ते पर तेजी से अग्रसर हो। वर्तमान समय में कई बार देखा गया है कि कितनी भी तेजी से आर्थिक प्रगति क्यों ना हो जाए, जब तक समाज में सद्भावना का वातावरण ना हो, तब तक, इस प्रकार की प्रगति का लाभ निर्धन एवं कमजोर व्यक्तियों तक नहीं पहुंच पाता। राजनीतिक नेतृत्व इस प्रकार के बयान देते रहते हैं जिससे सद्भावना का वातावरण बनाने के प्रयासों को ठेस पहुंचती है।

क्या देश का नागरिक इतनी सी आशा सन् 2022 में नहीं कर सकता कि सभी दलों के नेता गण देश हित में कार्य करेंगे, चुनावों में मर्यादित भाषा का प्रयोग करेंगे एवं केवल उन बिंदुओं पर अपना प्रचार सीमित रखेंगे जो सामान्य जन के जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में सहायक हो। एक बार जब राजनीतिक नेतृत्व इस दिशा में कार्य करना प्रारंभ करेगा, तो देश के नागरिक अपने आप उनके इस प्रयास में जुड़ते चले जाएंगे। तब, भारत, एक ऐसा देश बन पाएगा जहां सब लोग शांति से, ईमानदारी से और संवेदनशीलता से एक–दूसरे के लिए पूरक बनते हुए देश को प्रगति के पथ पर अब बढ़ाने में अपने पूरे सामर्थ्य से योगदान देंगे। बस यही आशा है कि मेरी यह कल्पना, नव वर्ष 2022 से मूर्त रूप लेना प्रारंभ कर दे।

सभी पाठकों को नव वर्ष की बहुत–बहुत शुभकामनाएं!

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

'जय–विजय' में उपजती स्थाई पराजय

'जय' का अर्थ है सबकी भलाई या खुशी और उल्लास का उदघोष जब भी कोई खुशी का मौका हो या आने वाला हो 'जय' के लिए प्रतिद्वंदी की आवश्यकता नहीं होती 'जय' के लिए कोई लड़ाई–झगढ़ा युद्ध या अहम का टकराव अथवा स्वयं को सिद्ध करना आदि–आदि नहीं होता। इसलिए 'जय' में खिंचाव या तनाव का कोई स्थान नहीं रहता। अपितु, इसके विपरीत 'जय' के उद्घोष से 'स्ट्रेस और टेंशन' से रिलीफ मिलती है, उसे भुलाया जाता है। यह 'जय' सिर्फ प्रसन्नता और सुख के आभास का प्रतीक है। यह कहा जा सकता है कि 'जय' कहने करने में बस हर प्रकार से और हर किसी के लिए प्रसन्नता मनाने, सम्मान देने के लिए प्रयोग होता है।

इसके विपरीत 'विजय' भावार्थ एक पक्ष के द्वारा दूसरे पक्ष के अधिकारों, इच्छाओं, प्राणों संस्कारों का हनन कर उस पर स्वयं का अधिपत्य जमा लेना ही विजय है। विजय में प्रतिद्वंदी की आवश्यकता अनिवार्य है, चाहे वह प्रतिद्वंदी आप स्वयं ही हों या आपके शत्रु या आपकी इच्छा या आपकी इगो। स्पष्ट है 'विजय' प्राप्त करने के लिए आपको को हमेशा कुछ न कुछ खोना अवश्य पड़ता है, चाहे वह आप खुद हों या आपके मूल्य,संस्कार और संस्कृति। 'विजय' प्राप्त करने के बाद भी शायद आपको प्रसन्नता ना मिले । वास्तव में विजय' अंततः एक नेगेटिव एक्ट ही होता है चाहे हमें कुछ देर के लिए यह लगे कि आपने कुछ हासिल कर लिया है पर अंततः सम टोटल में हम खोते ही खोते होते हैं बहुत कुछ हारते हैं। इस जय को छोड़कर विजय से निकली पराजय आज हमें लीलने को आतुर है।

गांधी विरोध से प्रसिद्धि मिल रही है विजयी मुट्ठियाँ लहराई जा रही हैं और परिणाम में पराजित समाज हताश होकर देख रहा है। एक समय था जब यह अपराध था। अब इसे सामाजिक परिवर्तन का बाना पहनाया जा रहा है। अब साधन है, विज्ञान है, ताकत है, पैसा है। निरंतर विजय की आकांक्षा और उपलब्धि व्यक्ति को नास्तिक बनाती है हां दिखावा घनघोर आस्तिक का चौगा जरूरी है। मंदिर भव्य तो बनाये जाते हैं पर पूजा सुविधाजनक होनी चाहिए। प्रजा राजा की कृपापात्र हो तो विजयकारा तो बनता है?

चाणक्य ने लिखा है कि जनता को मूढ़ और अन्धविश्वासी कर देने से राजा निष्कंटक राज करता है। यज्ञों की भरमार, कथा–प्रवचन, चमत्कार, तन्त्र–मन्त्र, योगी, स्वामी और भगवान – ये सब शासक और शोषक वर्ग द्वारा प्रोत्साहित किये जा रहे हैं।

कुछ कृतघ्न कपूतों का कुनबा बापू को कोसने में लगा है। विगत कुछ सालों से जब से ऐसे लोग अपने मंसूबों में कामयाब होने लगे हैं तब से महापुरुषों को कलुषित करने का प्रचलन बढ़ा है। कभी गांधी की पुण्यतिथि पर उनके पुतले को गोली मारकर कायरता प्रदर्शित हो रही है तो कहीं उनके हत्यारे को महिमामंडित किया जा रहा है। हत्यारे गोडसे के लिए अमर रहें के नारे लगाए जा रहे हैं तो कहीं उसका मंदिर बनाया जा रहा है। और अब तो निर्लज्जता की पराकाष्ठा यह है कि सार्वजनिक तौर पर एवं धर्म संसद आयोजित कर गांधी को गाली दी जा रही है लेकिन सच्चाई यही है कि गांधी को गोली मारकर भी न मारा जा सका। गांधी विचार और सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। देश के मिज़ाज में, बहुतायत जनता के मन में और यहाँ तक की वैश्विक पटल पर अपने विचारों और सिद्धांतों के साथ गांधी आज भी मौजूद हैं।

गांधी को मिटाने की कई कोशिशें लगातार हो रही हैं। सोशल मीडिया पर गांधी को बदनाम करने के लिए झूठी कहानियाँ निरंतर फैलाई जाती हैं। ट्विटर पर हैशटैग ट्रेंड कराए जाते हैं। देश की युवा पीढ़ी को बरगलाने और सच्चाई से दूर झूठे क़िस्सों से गांधी को विलेन साबित करने का प्रयास हो

राजेन्द्र मोहन शर्मा

रहा है।

लेकिन ये क्यों हो रहा है? कौन कर रहा है? आप अगर गौर करें तो आसानी से समझ जाएँगे कि ये उसी विचारधारा के लोग हैं जिनका विश्वास और नीतियां समाज को तोड़ने की हैं। ये भारत के विभिन्न वर्गों, धर्मों और जातियों में एकता नहीं चाहते। ये बँटवारे और ध्रूवीकरण में भरोसा रखते हैं। इसी को सत्ता प्राप्ति का माध्यम बनाते हैं। दुर्भाग्य से पिछले कुछ वर्षों में इन्हें इसमें कामयाबी भी मिली है।

लेकिन इस पूरे प्रक्रम में नुकसान देश का हो रहा है। जिस गांधी को दुनिया भर के देशों में सम्मान मिला है उस गांधी का अपने ही घर में अपमान कर हम दुनिया को कौन सा संदेश दे रहे हैं? हम अपने लिए अर्थात् भारत के लिए कैसी छवि का निर्माण कर रहे हैं? गांधी के सम्मान में दुनिया के कई देशों में उनके नाम पर सड़कें हैं, संग्रहालय हैं और मूर्तियाँ लगी हैं। और जिस गांधी ने दुनिया भर में भारत को गौरव प्रदान किया, कृतघ्न भारतीय अपने ही देश में उनकी मूर्तियाँ खंडित कर गौरवान्वित हो रहे हैं।

एक वर्ग को शायद नहीं पता कि गांधी से कुछ मुद्दों पर वैचारिक मतभेदों के बावजूद नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने ही पहली बार गांधी को राष्ट्रपिता कहा था। रेडियो रंगून से प्रसारित अपने रेडियो संदेश में नेताजी का गांधी को राष्ट्रपिता

■ ..उठिए, जागिए और बचा लीजिए भारत को इससे पहले कि नफरत की बयार सब कुछ बहा ले जाए

कहना साबित करता है कि सुभाष के मन में गांधी के लिए कितना सम्मान था। तो आज जो गांधी को राष्ट्रपिता कहने के विरोध में हैं उनकी योग्यता या देशभक्ति क्या नेताजी से बड़ी है? गुरुदेव टैगोर ने गांधी को महात्मा कहा था। तो क्या गांधी के व्यक्तित्व को छोटा करने में लगे लोगों की योग्यता रवीन्द्र नाथ से अधिक है? राष्ट्रवाद के नाम पर एक समूह और उनके अनुयायियों का पूरा कुनबा मिलकर भी नेताजी और रवींद्र नाथ के पैर की धूल तक नहीं हो सकता। ये समाज को बाँटने और अस्थिर करने के अपने प्रयासों में पूरी मुस्तैदी से लगे हैं। इसका ही परिणाम है कि क्रिसमस का विरोध करते हुए अंबाला में दशकों पुरानी ईसा मसीह की मूर्ति तोड़ दी जाती है। क्रिसमस के दिन तुलसी पूजन दिवस मनाने और अंग्रेज़ी कैलेंडर के नव वर्ष का बहिष्कार करने की रवायत चली पड़ी है। यह सही है कि हिंदू पंचांग का नव वर्ष चैत्र प्रतिप्रदा को होता है परन्तु यह आज पहली बार नहीं कि अंग्रेज़ी कैलेंडर के पहली तारीख़ का उत्सव मनाया जा रहा। हम जन्मदिन या शादी की तिथि विक्रम संवत् के अनुसार तो नहीं मनाते? 'यह नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं' जैसी कविता के लिए तो ये लोग दिनकर के नाम का झूठा इस्तेमाल भी कर लेते हैं लेकिन वही दिनकर ने गांधी के लिए क्या कहा था यह उनको स्वीकार्य नहीं होता। दिनकर ने लिखा था–

बापू ! तू वह कुछ नहीं, जिसे
ज्वालाएँ घेरे चलती हैं,
बापू ! तू वह कुछ नहीं, दिशाएँ
जिसको देख दहलती हैं।
तू सहज शान्ति का दूत, मनुज
के सहज प्रेम का अधिकारी,
दृग में ऊंड़ेलकर सहज शील
देखती तुझे दुनिया सारी।
बापू ! मैं तेरा समयुगीन; है बात
बड़ी, पर कहने दे;
लघुता को भूल तनिक गरिमा
के महासिन्धु में बहने दे।
यह छोटी–सी भंगुर उमंग पर !
कितना अच्छा नाता है,
लगता है पवन वही मुझको जो
छू कर तुझको आता है।

समझिए इस कुत्सित खेल को। खुद को, समाज को, देश को और भविष्य को बचाना होगा। अपने बच्चों को गांधी बनने की प्रेरणा दीजिए। धर्म को संकीर्णता से परे जाकर स्वामी विवेकानंद की नज़रों से समझिए। अपने ऐतिहासिक भाषण में स्वामी विवेकानन्द ने कहा था–

"मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूं, जिसने दुनिया को सहनशीलता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है। उन्होंने आगे कहा था कि हम सिर्फ सार्वभौमिक सहनशीलता में ही विश्वास नहीं रखते, बल्कि हम विश्व के सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं।

स्वामी जी ने एक और बड़ी बात कही थी कि भारत के लाखों पीड़ित जनता अपने सूखे हुए गले से जिस चीज के लिए बार–बार गुहार लगा रही है वो रोटी है। वो हमसे रोटी मांगते हैं, लेकिन हम उन्हें पत्थर पकड़ा देते हैं। भूख से मरती जनता को धर्म का उपदेश देना उसका अपमान है।

..उठिए, जागिए और बचा लीजिए भारत को, भारत के भविष्य को। इससे पहले कि नफरत की बयार सब कुछ बहा ले जाए, इसे रोक लीजिए या फिर चिरस्थाई पराजय के लिए तैयार रहें।

राजेन्द्र मोहन शर्मा
साहित्यिकार, शिक्षाविद
और चिन्तक

झारखंड के शक्रूद्दीन ने स्वर्ण, हरियाणा के कुलदीप को रजत

उदयपुर, (कासं)। सुखाड़िया विश्वविद्यालय एवं राजस्थान राज्य पावरलिफ्टिंग संघ के संयुक्त तत्वावधान में सुविवि विवेकानंद सभागार में चल रही राष्ट्रीय जूनियर एवं सब- जूनियर पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में 59 किग्रा भार वर्ग में झारखंड के मो. शक्रूद्दीन ने कुल 532.5 किलो वजन उठाकर स्वर्ण वही हरियाणा के कुलदीप ने 505.5 किलो वजन उठाकर रजत पदक जीता। तेलंगाना के भरत यादव ने 492. 5 किलो वजन उठा कांस्य पदक हासिल किया।

सब–जूनियर 66 किलोग्राम भार वर्ग में राजस्थान के चंद्र प्रकाश ओझा ने 600 किलो वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीता। वहीं हरियाणा के दीपक ने 550 किलो वजन उठाकर रजत पदक व दिल्ली के किशन ने 550०किलो वजन उठाकर कांस्य पदक जीत जूनियर 59 किलोग्राम भार वर्ग में कर्नाटक के आदर्श अत्तावर ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 607. 5 किलो किलो वजन उठाकर स्वर्ण पदक, तमिलनाडु के परमेश एस ने 605 किलो वजन उठाकर रजत पदक, केरला के अभीन बी ने 560 किलो वजन उठाकर कांस्य पदक जीता।

74 किग्रा सब- जूनियर वर्ग में पंजाब के दलजीत सिंह ने 625 किलो वजन उठाकर स्वर्ण पदक, महाराष्ट्र के कुणाल ने 605 किलो वजन उठाकर रजत पदक व आंध्र प्रदेश के पी वी कृष्णा ने 573.5किलो वजन उठाकर रजत पदक जीता। वही 74 किग्रा जूनियर वर्ग में मध्य प्रदेश के सुमित सिंह ने 702.5 किलो वजन उठाकर स्वर्ण पदक, तमिलनाडु के दिनेश ने 680 किलो वजन उठा रजत व हरियाणा के सत्येंद्र ने 676 किलो वजन उठाकर कांस्य पदक जीता।

उन्दरा से आठ फीट के अजगर का रेस्क्यू किया

पिण्डवाड़ा के निकट उन्दरा में वन टीम ने अजगर को रेस्क्यू कर पकड़ा।

पिण्डवाड़ा, (निसं)। समीपवर्ती ग्राम उन्दरा में स्थित एक निजि होटल के पीछे बड़ा अजगर आने पर लोग भयभीत हो गये । लोग अजगर को बिना क्षति पहुंचाये हटाना चाहते थे, जिसको लेकर स्थानीय लोगों ने सरपंच महेन्द्र कुमार मेघवाल को अजगर आने की सूचना दी। जिस पर सरपंच मेघवाल ने वन विभाग को सूचना दी।

वन विभाग की टीम वनपाल प्रेमप्रकाश व अंजू चौहान ने मौके पर जाकर अजगर का सुरक्षित रेस्क्यू किया। अजगर की लम्बाई करीब आठ फीट थी। उसे उन्दरा गोचर में स्थित नदी किनारे सुरक्षित छोड़ दिया।

प्रकृति प्रेमियों को लुभा रही शीत प्रवासी परिन्दों की अठखेलियां

माही के बेक वाटर क्षेत्र में इन दिनों शीत प्रवासी परिन्दों की उपस्थिति देखी जा रही है

बांसवाड़ा, (निसं)। माही के बेक वाटर क्षेत्र में इन दिनों शीत प्रवासी परिन्दों की उपस्थिति को देखी जा रही है। माही की लहरों के संग परिन्दों की अठखेलियां देखने का पक्षी प्रेमी भरपूर लुत्फ उठा रहे हैं । वागड पर्यावरण संस्थान के अध्यक्ष डॉ. दीपक द्विवेदी ने बताया कि माही के बेक वाटर क्षेत्र में घंटों बैठकर इन परिन्दों की गतिविधियों को निहारने का रोमांचकारी अनुभव है। उन्होंने बताया कि माही के किनारे प्रवासी पक्षियों की उपस्थिति से गुलजार है। सुबह के समय किनारों पर इनको भोजन करते देखना, मछली का शिकार करते देखना प्रकृति प्रेमियों को लुभा रहा है।

इस क्षेत्र में नोर्दन पिनटेल, नोर्दन शॉव्लर, यूरेशियन विजन, कॉमन पोचार्ड, टफटेड पोचार्ड के बडे ग्रुप देखे जा सकते है। इसके अलावा कॉमन टील, रडी शेलडक, कॉमन कूट, कॉमन रेडशैंक, ब्लेक टेल्ड गोडविट, व्हिस्कर्ड टर्न, लेसर ब्लेक बेक्ड गल के साथ स्थानीय परिन्दों की उपस्थिति को देखा जा सकता है। संस्थान के यश सराफ व वैभव जोशी ने बताया कि स्थानीय परिन्दों में पेण्टेड स्टॉर्क, ओपन बिल, व्हाइट स्टॉर्क, इग्रेट्स, कॉरमोरेन्ट्स, डार्टर, रिवर टर्न, आइबिज, हेरन, स्वेलोज, मैना, रेड वेटल्ड लेकविंग, स्पून बिल आदि को देखा जा सकता है।

माही बेक वाटर क्षेत्र में शीत प्रवासी परिन्दें अटखेलियां करते हुए।

- **सुबह के समय किनारों पर इनको शिकार करते देखना प्रकृति प्रेमियों को लुभा रहा है**
- **नोर्दन पिनटेल, नोर्दन शॉव्लर, यूरेशियन विजन, कॉमन पोचार्ड, टफटेड पोचार्ड के बड़े ग्रुप देखे जा सकते हैं**

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 5 जनवरी, 2022

पौष मास शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2078, श्रवण नक्षत्र प्रातः 8:46 तक, वज्र योग सायं 6:14 तक, गर करण दिन 2:35 तक, चन्द्रमा आज सायं 7:54 पर कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–धनु, चन्द्रमा–मकर, मंगल–वृश्चिक, बुध–मकर, गुरू–कुम्भ, शुक्र–धनु, शनि–मकर, राहु–वृष, केतु–वृश्चिक राशि में।

राजयोग आज प्रातः 8:46 से दिन 2:35 तक है। रवियोग प्रातः 8:46 से रात्रि 7:14 तक है। भद्रा रात्रि 1:32 से गुरूवार दिन 12:30 तक रहेगी।

आज त्रिम्बुतिक (जैन) है। पंचक सायं 7:54 से आरम्भ होगा। आज से जमादि उलसानि मु. मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:56 तक, शुभ 11:14 से 11:32 तक, चर 3:08 से 4:25 तक, लाभ 4:25 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:43

मेष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को आज टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में उचित परामर्श मिलेगा।

सिंह
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। अस्त–व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

तुला
घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

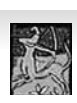

धनु
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

कुंभ
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यक्तिगत/धार्मिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।